उत्पत्ति अध्याय ३
मनुष्य के पतन की कहानी

- वह प्राचीन सर्प न तो जंगली था और न ही पालतू जानवर, वह एक अलग ही श्रेणी का प्राणी था।
- वह सर्प शैतान के द्वारा जीवन की नकल करने का प्रयास हो सकता था।
- पहले तो सांप को बगीचे के अंदर जाने की अनुमति दी गई थी।

दोहरेपन की वास्तविकता

स्वर्ग और
आध्यात्मिक जगत

आत्मिक वास्तविकता

भौतिक वास्तविकता

पद ३ बड़ा झूठ

- सर्प कहता है, "...
  यह सच नहीं है कि तुम्हारी मृत्यु निश्चित है..."

- शैतान को बगीचे से निकाल दिया गया,
  यह उसी घटना के समानांतर है जब
  उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया था।

- पहले धरती पर गिराया गया (आदम-आह),
  बाद में उसे बगीचे से बाहर निकाल दिया गया
  और धूल में रेंगने के लिए छोड़ दिया गया (आदम-आह)
  आदम की यह घटना और यहाँ तक कि भले-बुरे के ज्ञान
  के वृक्ष का फल खाना ही मनुष्य का पतन, परमेश्वर की
  कृपा से पतन, और यह पतन है।

ईसाई धर्म और यहूदी धर्म "पतन" को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखते हैं।

- ईसाई धर्म पतन को उस समय के रूप में देखता है जब बुराई ने दुनियां और मनुष्य में प्रवेश किया।
- यहूदी धर्म में पतन को एक प्रकार की मुक्ति के रूप में देखा जाता है, जिसके द्वारा मानव जाति को चुनाव करने का अवसर प्राप्त हुआ।

1) मनुष्य प्रेम करना और आज्ञा मानना चुन
2) सकता है, या नहीं भी चुन सकता है।
2) मनुष्य स्वयं उद्धार का मार्ग खोज सकता है।

- यहूदी धर्म मोक्ष को एक राष्ट्रीय मुद्दा मानता है न कि ईश्वर के साथ व्यक्तिगत पुनर्स्थापन।

पद ८ परमेश्वर बगीचे मे टहल रहे है।

- प्रश्न: क्या परमेश्वर सचमुच बगीचे में टहल कर रहे थे?
- क्या परमेश्वर "खुशी से उछलता है", "आंसू बहाता है", "तलवार चलाता है"?
- ईसाई आमतौर पर परमेश्वर के भौतिक अवतार की बात करते समय यीशु के बारे में सोचते हैं।

मैमोनिड्स, 12वीं शताब्दी ईस्वी कहती है

"...तो तोरह और नवीयो की किताबों में इससे संबंधित सभी शब्द जुड़े हुए भाषा हैं।"

परमेश्वर आत्मा है।

- "...प्राचीन विद्वानों ने कहा था कि तोरह को हमारी भाषा में लिखा गया है..."
- "...ये वाक्यांश उन लोगों की समझ के स्तर के अनुरूप हैं जो केवल भौतिक अस्तित्व को ही समझ सकते हैं..."
- परमेश्वर मनुष्य नहीं है।
- यीशुआ एक विशिष्ट व्यक्ति थे, जिनका जन्म एक विशिष्ट स्त्री से, एक विशिष्ट समय में हुआ था।
  वह १०० प्रतिशत परमेश्वर और १०० प्रतिशत माता थे, ५०/५० नहीं।

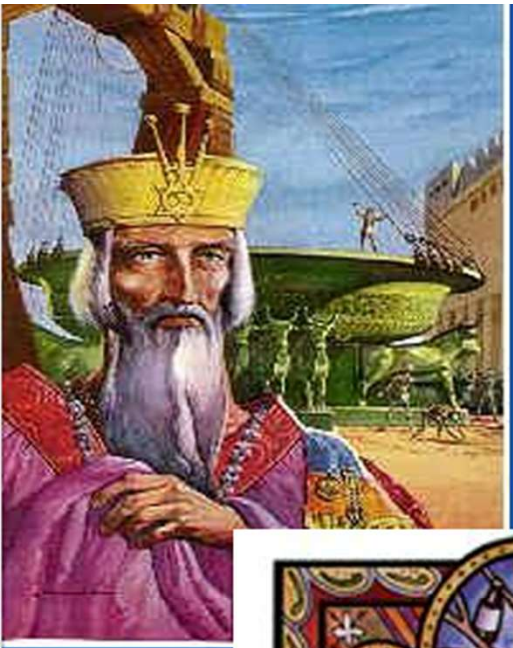

राजा सुलेमान के शब्दों और वर्जित फल खाने के बीच एक दिलचस्प संबंध है।

- *सभोपदेशक १:१८ क्योंकि अधिक ज्ञान में अधिक दुःख होता है, और ज्ञान में वृद्धि से पीड़ा में भी वृद्धि होती है।*
- हव्वा ***(इव) का कहना है कि तीन चीजें उन्हें उस पेड़ की ओर आकर्षित करती हैं:***
- ***1) फल देखने में स्वादिष्ट लग रहे थे।***
- ***2) पेड़ सुंदर था।***
- ***3) पेड़ ज्ञान का स्रोत था।***

हव्वा ज्ञान प्राप्त करना चाहती थी।

एक और मौलिक:
परमेश्वर के निर्देशों को विकृत करना।

- आदम और हव्वा ने परमेश्वर के आदेश में कुछ जोड़ा।
- उत्पत्ति २:१७ लेकिन भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसे खाओगे, निश्चय ही मर जाओगे।
- हव्वा ने सर्प से कहता है: उत्पत्ति ३:३ लेकिन उस वृक्ष के फल के बारे में, जो बगीचे के बीच में है, परमेश्वर ने कहा है, 'तुम इसे न तो खाओगे और न ही छूओगे, अन्यथा तुम मर जाओगे।'
- नीतिवचन में राजा सुलेमान कहते हैं: नीतिवचन ३०:६ उसकी बातों में कुछ मत जोड़ो, नहीं तो वह तुम्हें फटकारेगा और तुम झूठे साबित हो जाओगे।
- एक बार आदम और हव्वा ने झूठ बोला, शैतान ने उन्हें अपने वश में कर लिया।

पद १५ भविष्यसूचक और अस्पष्ट।

- उत्पत्ति ३:१५ और मैं तेरे और स्त्री के बीच,और तेरे वंश के बीच बैर डालूंगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को कुचलेगा।
- ईसा मसीह के आने से पहले इसे मसीहाई भविष्यवाणी के रूप में देखना कठिन है।
- मनुष्य आमतौर पर घटना घटित होने के बाद ही परमेश्वर पर विश्वास करता है।
- कलीसिया को इब्रानियों की इस चूक के लिए उनकी अत्यधिक आलोचना नहीं करनी चाहिए।

यरूशलेम: दुनिया के लिए कांपने का प्याला।

- कलीसिया: क्या हम परमेश्वर पर विश्वास करेंगे?
- इब्रानियों को चेतावनी दी गई थी, लेकिन उन्होंने इसे अनदेखा कर दिया।
- कलीसिया इज़राइल की ओर आँखें मूंद लेता है।
- हमें पहले ही चेतावनी मिल चुकी है।

पद २४ आवरण ।

- वनस्पतियों से बने वस्त्र अपर्याप्त थे... इसके लिए परमेश्वर द्वारा प्रदत्त पशुओं की खाल ही आवश्यक थी।
- **मनुष्य अपने पापों को छुपाने के लिए स्वयं आवरण नहीं बना सकता।**
- **पशुओं को मरना पड़ा**

  मनुष्य के पाप की कीमत निर्दोष के खून से चुकानी पड़ी।

- **परमेश्वर ने मनुष्य के साथ संबंध स्थापित करने के लिए अपने प्रिय का बलिदान दिया।**

यहूदी दृष्टिकोण: सभी मनुष्यों में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के झुकाव होते हैं।

- एत्ज़ेर हातोव = अच्छा झुकाव
- एत्ज़ेर हराह = दुष्ट प्रवृत्ति
- हवा ने फल खाने से पहले झूठ बोला था।
- क्या बुराई सृष्टि का हिस्सा थी?
- बुराई का पूर्व-अस्तित्व इतना स्पष्ट नहीं है।

बहिष्करण ।

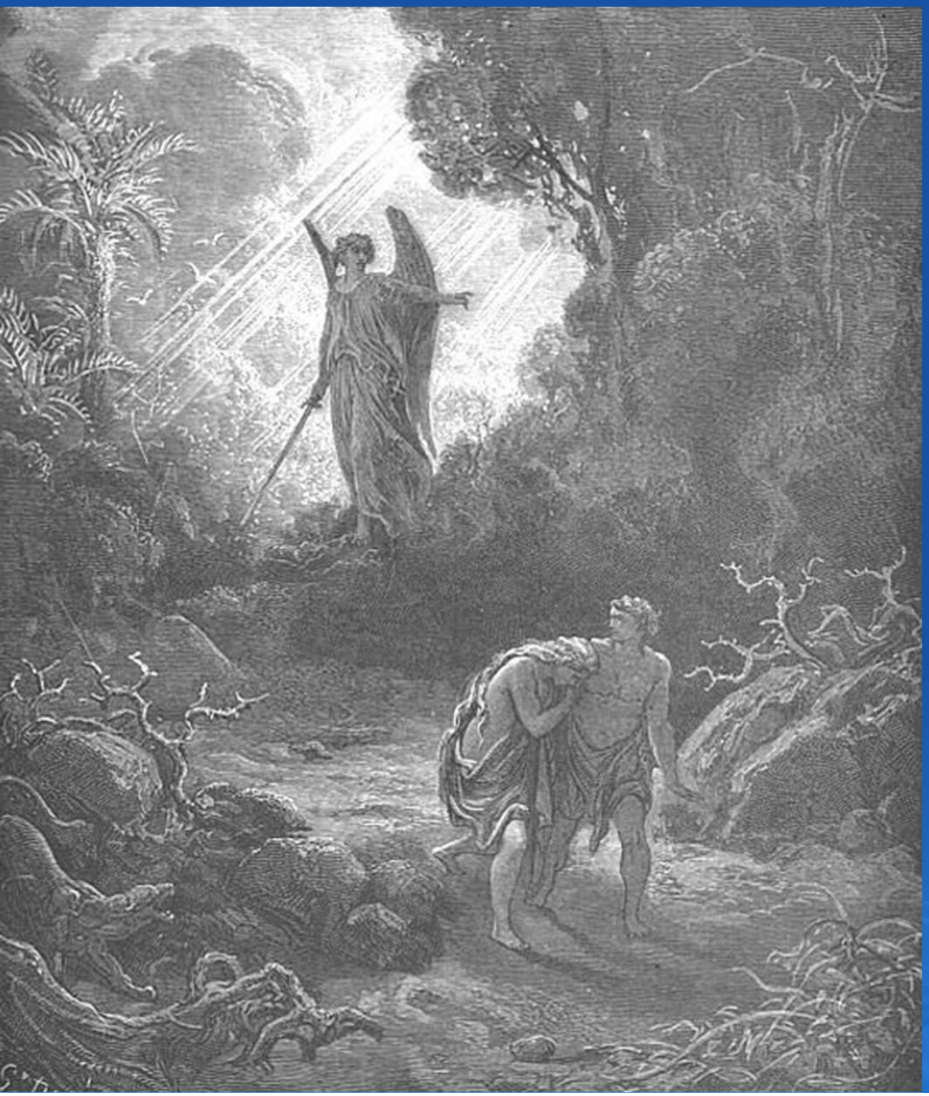

- आदम और हव्वा शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर से अलग हो गए थे।
- बगीचे के प्रवेश द्वार पर स्वर्गदूत जैसा रक्षक तैनात थे।
- प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में था।
- परमेश्वर अपनी पवित्रता के निकट अपवित्रता और पाप को आने नहीं दे सकता।

उत्पत्ति ४।

- आदम और हवा के पुत्र कैन और हाबिल।
- यह दर्ज की गई पहली हत्या है।
- इब्रानियों का नाम महत्वपूर्ण हैं।
- कायिन = कैन का अर्थ है " परमेश्वर से प्राप्त"।
- कायिन एक किसान था।

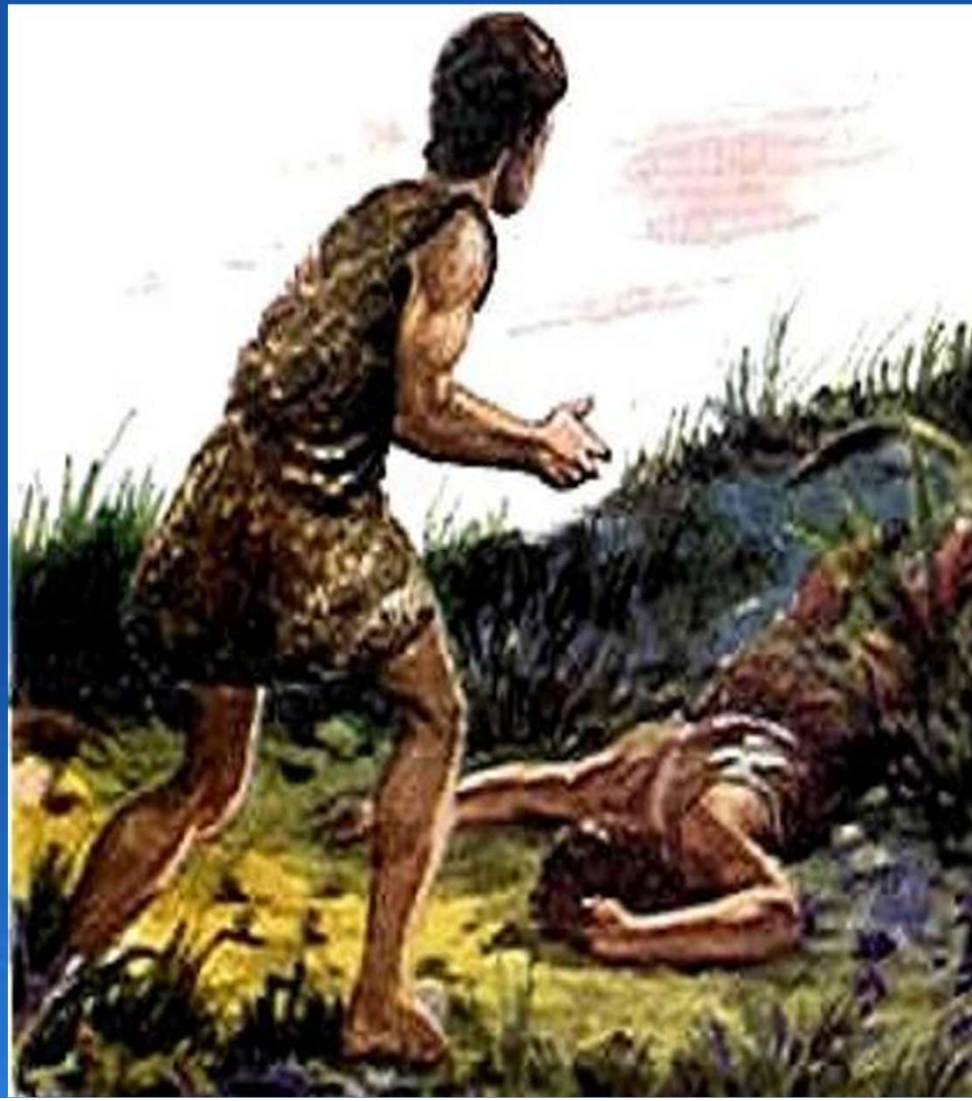

परमेश्वर हेवेल का बलिदान स्वीकार करता है, लेकिन कायिन का नहीं।

- हेवेल = एबेल
- हेवेल एक चरवाहा।
- बलिदान देना सामान्य और नियमित प्रक्रिया रही होगी।
- बलिदान बगीचे के प्रवेश द्वार पर होना अवश्य था, न कि बगीचे के अंदर।
- परमेश्वर भेड़ों को स्वीकार करता है, लेकिन पौधों को नहीं।

परमेश्वर ने एक को क्यों स्वीकार किया और दूसरे को क्यों नहीं?
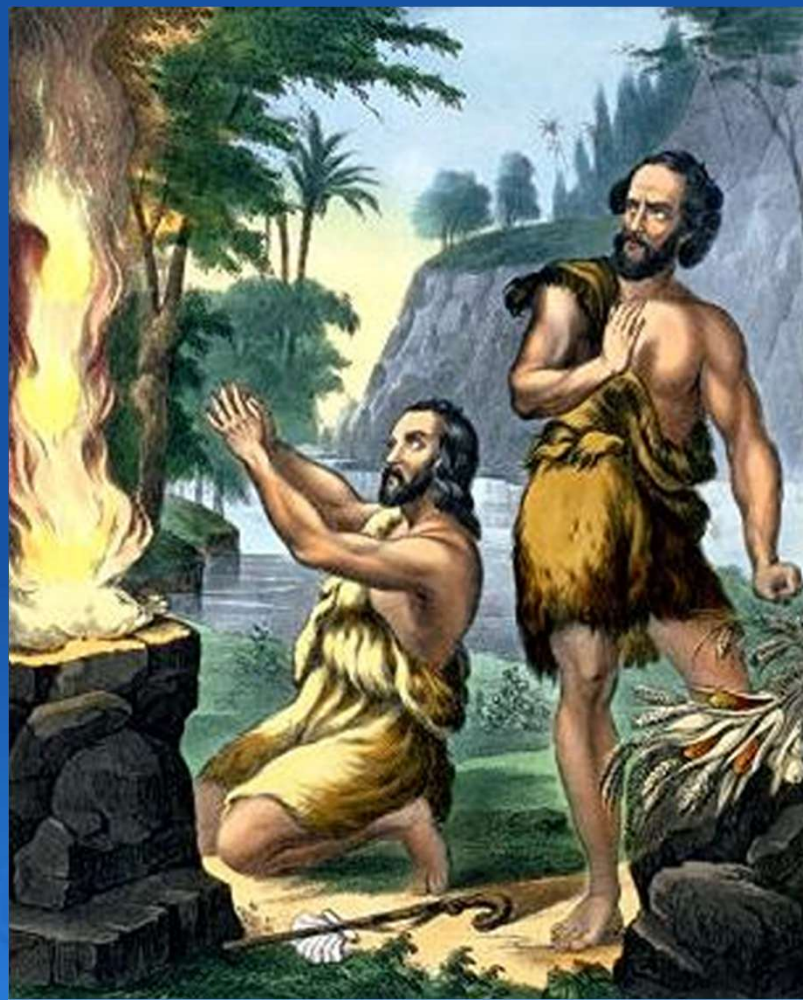
- संभवतः इस विशेष प्रकार के
- बलिदान के लिए एक जानवर की आवश्यकता थी।
- यह संभवतः 'ओलाह' (जली हुई बलि) या 'हाटा' (शुद्धिकरण बलि) के समकक्ष था।
- भेंट की प्रकृति।
- हेवेल एक प्रथम पुत्र को लेकर आया।
- कायिन साधारण लाया।
- इस युग में भेड़ें केवल बलि और वस्त्र (ढकने) के लिए ही उपयोग की जाती थीं, भोजन के लिए नहीं।